International Journal of Applied Research 2022; 8(10): 260-270

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(10): 260-270
www.allresearchjournal.com
Received: 15-07-2022
Accepted: 21-08-2022

डॉ उमा कांत यादव
सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, एश्री बजरंग पीजी कॉलेज दादर आश्रम, सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ उमा कांत यादव
सहायक प्रोफेसर समाजशास्त्र विभागएश्री बजरंग पीजी कॉलेज दादर आश्रम सिकंदरपुर बलिया, भारत

21वीं सदी में युवा असंतोष : कारक, प्रकृति एवं व्यवहार

डॉ उमा कांत यादव

प्रस्तावना

युवाओं को अपने जीवन काल में आने वाली अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस समय युवा वर्ग की महत्वकांक्षायें बढ़ती हैं और वे नाना प्रकार से अपनी आर्थिक, सामाजिक व मानसिक तृप्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। उनमें से अधिकांश युवा अपनी आंतरिक तथा बाह्य योग्यताओं व परिस्थितियों से पूर्णरूपेण परिचित न होने पर असफल रहते हैं। फल यह होता है कि उनका सारा परिश्रम, समय व धन व्यर्थ जाता है। वे अपने जीवन तथा समाज में स्थापित नहीं हो पाते। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि ''जब युवाओं की मनोवैज्ञानिक आवश्यकतायें पूर्ण नहीं होतीं, तो विकास की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है जो आगे चलकर समस्या का रूप धारण कर लेती है''। भारत में व्याप्त जाति व्यवस्था ने सभी नागरिकों को विकास के यथोचित एवं समान अवसरों की उपलब्धता में बाधा पहुँचाई है। अनेक अनुभवजन्य अध्ययन (भट्ट, 1975; सरकार, 1978) बताते हैं कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक–सांस्कृतिक पिछड़ेपन ने विभिन्न जातिवर्गों के मध्य असमानता में वृद्धि की है (राजू, 2008; थोराट, 2009)।

युवा अपने आपको सबसे अधिक बुद्धिमान समझता है। उसकी यही इच्छा रहती है कि परिवार के सभी व्यक्ति उससे सलाह लें। उसका अपना अलग दृष्टिकोण होता है और उसकी मान्यतायें अपने से छोटों तथा बड़ों से भिन्न होती हैं (कोलमैन, 1961)। युवा प्रत्येक वस्तु को वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसता है। इसलिए परम्परागत रीति रिवाजों व रूढ़ियों को नहीं मानता और उसे अगर इन रूढ़ियों को मानने के लिए बाध्य किया जाता है तो उसमें अनुशासनहीनता व विद्रोह की भावना आ जाती है। युवा अपने विचार प्रकट करना चाहते हैं, लेकिन समाज उनके विचारों को नहीं सुनता, क्योंकि समाज उनके विचारों को अपरिपक्व व अव्यवहारिक मानता है। इससे युवाओं में विद्यालय व समुदाय से भी संघर्ष हो जाता है। युवा जोश के कारण विद्यालय में छोटे–छोटे दल बना लेते हैं और उनमें संघर्ष चलता रहता है। युवा अपराधों में विद्यालय में अनुपस्थित रहना भी एक महत्वपूर्ण कड़ी है। अतः इस समय उन पर ध्यान रखना आवश्यक है। युवा कभी–कभी समय पर घर से चल कर विद्यालय न पहुँच कर दूसरे स्थानों पर बैठे रहते हैं और विद्यालय समय की समाप्ति के साथ ही घर पहुँच जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी बातें भी होती हैं जिन्हें एक युवा सार्वजनिक रूप से गुप्त रखना चाहता है (स्मिथ, 1962)।

सेल्टन (2008) ने विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति सम्बन्धी अपने अध्ययन में पाया कि उच्च कक्षा स्तर में वृद्धि के साथ–साथ विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है क्योंकि वे निर्णय लेने की दहलीज पर पहुँच जाते हैं। यों तो युवा प्रौढ़ समाज के मूल्यों को आत्मसात् करता है, लेकिन प्रौढ़ समाज उसे प्रौढ़ की भूमिका निभाने के लिए अयोग्य समझता है। अतः युवा को इन भूमिकाओं को निभाने से सम्बन्धित अवसरों से वंचित कर दिया जाता है। इन सामाजिक, शारीरिक और मानसिक विशेषताओं तथा आवश्यकताओं के कारण युवाओं का आकर्षण हम–उम्र मित्रों में बढ़ जाता है (वेसलर, 1953)।

विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारक तत्त्वः ''भारत में युवा समस्या बहुधा संकुचित एवं वैयक्तिक शिकायतों एवं मार्गों से प्रारम्भ होती है और उसका परिणाम बहुधा सार्वजनिक सम्पत्ति की विशाल क्षति और कभी–कभी घृणित हिंसा का विस्फोट होता है''। विद्यार्थियों में उत्पन्न हुई इस समस्या के लिए कोई छात्रों को, कोई शिक्षकों को, तो कोई अभिभावकों को दोषी मानता है। इसके अतिरिक्त कुछ लोग समाज को, वर्तमान परिस्थितियों को और कुछ लोग वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को दोषी मानते हैं (अग्रहरि, 2000)। इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय आयोग ने अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि ''इस स्थिति का उत्तरदायित्व किसी एक पक्ष पर नहीं है। इसका उत्तरदायित्व केवल छात्रों या अभिभावकों या शिक्षकों या राज्य सरकारों या राजनैतिक दलों पर नहीं है, वरन् सब पक्षों पर है'' (जी0ओ0आई0, 1949)।

युवा असंतोष के निम्नलिखित कारक हो सकते हैं–

सामाजिक कारक– सामाजिक मूल्य किसी व्यक्ति तथा समूह की वांछनीय तथा अंवाछनीय, प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में वे विशिष्ट धारणायें होती है जो उपलब्ध साधनों, लक्ष्यों तथा क्रियाओं के चयन को प्रभावित करती हैं (क्लाकहोन, 1962)। युग के बदलते हुए रूप के साथ हमारी सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। आज हमारे समाज में दो विभिन्न पीढ़ियों के मूल्यों, मान्यताओं एवं विचारों का आपस में संघर्ष चल रहा है एवं उससे उत्पन्न संघर्ष युवा असंतोष के लिए काफी सीमा तक उत्तरदायी है।

पारिवारिक कारक– परिवार के प्रत्येक तत्व का परिवार के प्रत्येक सदस्य पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है, चाहे वह परिवार का आकार हो या सदस्यों की संख्या; परिवार की आर्थिक स्थिति हो या शैक्षिक स्थिति, माता–पिता हों या परिवार का मुखिया। ब्रूबेकर (1939) का कथन है कि सामान्यतः परिवार में बच्चों की संख्या जितनी कम होती है उसी के अनुपात में उस परिवार का जीवन स्तर ऊँचा होता है।

सांस्कृतिक कारक– भारतीय संस्कृति पर यदि गौर किया जाय तो यह कहा जा सकेगा कि आज उसका लोप हो रहा है जबकि उसका नाम अपेक्षाकृत पहले से अधिक विज्ञापित हुआ और फैला है; यह कैसा विरोधाभास है। युवा असंतोष और आन्दोलन का एक कारण यह भी है कि लगातार सांस्कृतिकता का ह्रास होता जा रहा है। इसलिये युवा दिशा–भ्रष्ट और विद्रोही हैं। विध्वंस ही उसकी सृजन शक्ति है और आत्मतोष का कारण भी (भटनागर, 1974)।

शैक्षिक कारक– विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों का परिवेश छात्रों की मनःस्थिति के विपरीत होना, पाठ्यक्रम का नीरस तथा बोझल होना, छात्रों में शिक्षा के प्रति आक्रोश और संगठन के प्रति क्षोभ युवा असंतोष के मुख्य कारण हैं (भटनागर, 1974)। लक्ष्य के अनुरूप व्यक्ति का सामाजीकरण करने में शैक्षणिक प्रणाली असफल रही है। शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण एवं सीखने की दशाएँ अपर्याप्त हैं। उनमें व्यवसाय के प्रति समर्पित सुयोग्य शिक्षक नहीं हैं और न ही पर्याप्त मात्रा में शैक्षिक उपकरण हैं। शिक्षकों द्वारा छात्र समस्याओं का समाधान न होना भी छात्रों में असंतोष बढ़ाता है (सक्सेना एवं चतुर्वेदी, 2004)।

आर्थिक कारक– बढ़ती हुई मँहगाई, मंहगी शिक्षा, फीस बढ़ना, छात्रवृत्ति कम होना और उसका पक्षपातपूर्ण तरीकों से वितरण आदि युवा छात्र असंतोष के लिए उत्तरदायी हैं।

राजनैतिक कारक– युवावर्ग में बढ़ती उच्छृंखलता का एक कारण है राजनेताओं द्वारा राजनीति में उनका अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए इस्तेमाल करना। कालेज और विश्वविद्यालय की राजनीति युवाओं के लिए सत्ता तक पहुंचने और उसका अंग बनने का प्रवेश द्वार है। हिंसा, गुंडागर्दी, तोड़फोड़ इस राजनीति का अभिन्न अंग होते हैं (कुमार, 2007)।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

युवा असंतोष की प्रकृति, व्यवहार एवं छात्र आन्दोलनों के सन्दर्भ में किये गये अध्ययनों में शैक्षणिक परिवेश, सामाजिक–आर्थिक समस्यायें, राजनैतिक हित, व्यवस्था परिवर्तन, शैक्षणिक दशायें आदि कारकों को युवाओं में असंतोष, कुंठा और विद्रोह की प्रवृत्ति विकसित करने हेतु जिम्मेदार माना गया है। इन अध्ययनों में विश्वविद्यालयों की शैक्षणिक एवं प्रबन्धकीय प्रकृति के अतिरिक्त विद्यार्थियों की जाति, धर्म, परिवार की आर्थिक स्थिति आदि कुछ ऐसे कारक चिन्हित किये गये हैं जो उनमें युवा असंतोष की भावना को नियन्त्रित करते हैं।

कारमेक (1961) के अनुसार विश्वविद्यालय सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम होता है। विद्यार्थी (1976) का मत है कि विद्यार्थियों में युवा असंतोष को एक अलग परिघटना के रूप नहीं देखा जा सकता; यह समग्र सामाजिक–सांस्कृतिक प्रणाली का ही एक हिस्सा है। स्पेन्सर (1982) ने भारतीय युवाओं में असंतोष का प्रमुख कारण भविष्य की असुरक्षात्मक भावना को माना है। खान (1984) ने अध्ययन में बताया है कि सामान्य सामाजिक–आर्थिक प्रस्थितियों में हो रहे ह्रास ने भी युवा असंतोष में वृद्धि की है। मिश्र (1993) का कहना है कि नवयुवकों को उच्च स्तर का नेतृत्व प्रदान करने में हमारी व्यवस्था असफल हो गयी है। शैक्षिक बेरोजगारी ने युवकों को अपरिवर्तनीय शैक्षिक पाठ्यक्रम को अस्वीकार करने के लिये तैयार कर दिया है। सूप (1998) के अनुसार सामाजिक सहयोग और तनाव से लड़ने की क्षमता युवा छात्र असंतोष की तीव्रता को प्रभावित करते हैं।

कुमार (2007) ने बढ़ती हुई बेरोजगारी को युवावर्ग में बढ़ती उच्छृंखलता का एक मुख्य कारण माना है। राउल (2012) ने अपने अध्ययन में पाया कि सरकार की नीतियों में जनभावना की कमी के कारण युवाओं में असंतोष की भावना पनप रही है।

वाघचवर व अन्य (2013) के अध्ययन में विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों के तनावग्रस्त छात्रों के प्रतिशत में सार्थक अन्तर पाया गया। पॉल (2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में नये अनुभव, नयी महात्वाकांक्षाएं एवं नई प्रतियोगिता की दिशा में प्रतिकूल प्रभाव प्रदर्शित हो रहा है।

शर्मा (2014) ने अपने शोधपत्र में भारतीय युवाओं द्वारा समाज, राजनीति, प्रशासन, स्कूलों और महाविद्यालयों से सम्बन्धित प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शारीरिक और मानसिक अशान्ति अपनाने के लिए जिम्मेदार विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारणों का विश्लेषण किया है। अंजुम एवं एजाज़ (2014) ने विद्यार्थियों में युवा असंतोष के लिए दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली, उद्देश्यहीन जीवन, अनिश्चित भविष्य, आर्थिक कठिनाइयों, कक्षा में विद्यार्थियों की अधिक संख्या, दोषपूर्ण शिक्षण पद्धति, पारिवारिक सदस्यों की उदासीनता, अनुपयुक्त शिक्षकों, सह–पाठ्यक्रम एवं रचनात्मक गतिविधियों की कमी, दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली, समाज में अनुशासनहीनता के तत्त्व, सरकार द्वारा शैक्षिक संस्थानों को दी जा रही अपर्याप्त धनराशि तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों को जिम्मेदार माना है।

विद्यार्थियों में युवा असंतोष से सम्बन्धित अध्ययनों के उपर्युक्त पुनरावलोकन से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों में युवा असंतोष के लिए कई प्रकार के कारण उत्तरदायी हो सकते हैं। विद्यार्थियों की आयु, धर्म, व्यक्तित्व, अन्तःक्रिया क्षेत्र, सामाजिक मूल्य, निवास स्थान, विश्वविद्यालय का चरित्र, परिसर की सन्तुलित स्थिति, शैक्षणिक स्थिरता आदि उनकी विचारधारा को प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में युवा असंतोष के कारक तत्त्वों, प्रकृति एवं व्यवहार का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य युवा असंतोष के कारक तत्त्वों, प्रकृति एवं व्यवहार का तथ्यपरक अध्ययन करना है। विशिष्ट रूप से इसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. युवा असंतोष की प्रकृति एवं व्यवहार का अध्ययन करना।
2. युवा असंतोष के कारक तत्त्वों का विश्लेषण करना।
3. उत्तरदाताओं के वैयक्तिक एवं सामाजिक परिवेश का विवेचन करना।
4. विद्यार्थियों में युवा असंतोष की प्रकृति, व्यवहार एवं युवा असंतोष के कारक तत्त्वों के प्रभाव का विश्लेषण करना।

परिकल्पना– प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख परिकल्पना है– ''वर्तमान शैक्षिक परिवेश में विद्यार्थियों में तीव्र युवा असंतोष है।'' साथ ही यह भी माना गया है कि–

1. छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के कारकों, प्रकृति एवं व्यवहार में सार्थक अन्तर है।

2. ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारकों, प्रकृति एवं व्यवहार में सार्थक अन्तर है।
3. विभिन्न सामाजिक श्रेणियों के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारकों, प्रकृति एवं व्यवहार में सार्थक अन्तर है।

शोध प्ररचना एवं विधितंत्र– प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति अन्वेषणात्मक है जिसमें वर्णनात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है। इसके लिए लखनऊ विश्वविद्यालय में संचालित होने वाले विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् 128 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत दैवनिदर्शन की व्यवस्थित विधि से किया गया है, जिसमें 64 स्नातक एवं 64 परास्नातक तथा प्रत्येक श्रेणी में बराबर–बराबर छात्र–छात्राएं सम्मिलित हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में क्षेत्रीय (प्राथमिक स्रोत) एवं प्रलेखीय (द्वितीयक स्रोत) दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में भारत एवं उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा की स्थिति तथा विद्यार्थियों में युवा असंतोष से सम्बन्धित सरकारी/गैर–सरकारी प्रतिवेदनों, सर्वेक्षणों के आँकड़े, शोध प्रतिवेदन, शोधपत्र, शोध–आलेख तथा शोध विषय से सम्बन्धित सामग्री जो विभिन्न आलेखों, प्रलेखों, पत्र–पत्रिकाओं एवं ग्रन्थों में उपलब्ध थी, का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाताओं से शोध विषय से सम्बन्धित सूचना प्राप्त कर संकलित सूचनाओं को विश्लेषित किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन को उत्तरदाताओं से साक्षात्कार एवं अवलोकन के माध्यम से पूर्ण किया गया है। तथ्य संकलन के यन्त्र के रूप में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण– प्रतिदर्श में सम्मिलित उत्तरदाताओं का वैयक्तिक परिवेश का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि प्रतिदर्श में सर्वाधिक (43.75%) उत्तरदाता 18–20 वर्ष आयुवर्ग के हैं। इनके अतिरिक्त 24.22% उत्तरदाता 21–23 वर्ष आयुवर्ग के, 21.09% उत्तरदाता 24–26 वर्ष आयुवर्ग के तथा 10.94% उत्तरदाता 27–28 वर्ष आयुवर्ग के हैं।

85.94% उत्तरदाता हिन्दू, 12.50% उत्तरदाता मुस्लिम तथा 1.56% उत्तरदाता अन्य धर्मों (सिख एवं ईसाई) के हैं। सामाजिक वर्गवार विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक (43.75%) उत्तरदाता सामान्य वर्ग के हैं, जबकि 36.72% उत्तरदाता अ0पि0व0 तथा 19. 53% उत्तरदाता अनु0जाति/जनजाति के हैं। इनमें से अधिकांश 94.53% उत्तरदाता अविवाहित हैं। विषयवर्ग के अनुसार प्रतिदर्श का विश्लेषण करने से विदित होता है कि सर्वाधिक (42.19%) उत्तरदाता कला वर्ग के हैं जबकि 33.59% उत्तरदाता विज्ञान वर्ग के तथा 24.22% उत्तरदाता वाणिज्य वर्ग के हैं।

तालिका सं0 1: उत्तरदाताओं का वैयक्तिक परिवेश

चर	विवरण	संख्या	प्रतिशत
आयु (वर्षो में)	18–20	56	43.75
	21–23	31	24.22
	24–26	27	21.09
	27–28	14	10.94
धर्म	हिन्दू	110	85.94
	मुस्लिम	16	12.50
	अन्य (सिख एवं ईसाई)	2	1.56
जाति	सामान्य	56	43.75
	अन्य पिछड़ा वर्ग	47	36.72
	अनुसूचित जाति एवं जनजाति	25	19.53
वैवाहिक स्तर	अविवाहित	121	94.53
	विवाहित	7	5.47
विषय–वर्ग	कला	54	42.19
	विज्ञान	43	33.59
	वाणिज्य	31	24.22

पारिवारिक स्वरूप– भारतीय सामाजिक जीवन में परिवार एक ऐसी आधारभूत इकाई है जिस पर समाज की सम्पूर्ण संरचना आधारित है। प्रत्येक बालक के समाजीकरण, व्यक्तित्व के विकास एवं व्यवहार पर नियन्त्रण परिवार के द्वारा ही सम्भव है (मिश्रा, 2006)। मैकाइवर एवं पेज (1950) के अनुसार ''परिवार पर्याप्त निश्चित यौन सम्बन्धों द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जनन एवं लालन–पालन की व्यवस्था करता है।'' बर्गेस और लॉक (1946) ने व्यक्तियों के व्यवहार के आधार पर परिवारों का वर्गीकरण 'संस्थागत' तथा 'सहचारिता' के रूप में किया है। ज़िमरमैन (1946) ने परिवार का वर्गीकरण न्यासधारी, गृहस्थ तथा आणविक में किया है परन्तु उन्होंने परिवार के इन प्रकारों को आनुभविक न मानकर आदर्श माना है। प्रत्येक परिवार का एक मुखिया होता है। मजूमदार (1958) के अनुसार 'परिवार से सम्बन्धित समस्त कार्यों में उसका स्थान सर्वोच्च होता है, उसको ही परिवार के सम्बन्ध में निर्णय लेने का अधिकार है।'

तालिका सं0 2: उत्तरदाताओं की पारवारिक संरचना

चर	विवरण	संख्या	प्रतिशत
पारिवारिक पृष्ठभूमि	ग्रामीण	48	37.50
	कस्बाई	34	26.56
	शहरी	46	35.94
परिवार की प्रकृति	एकाकी	74	57.81
	संयुक्त	54	42.19
परिवार का मुख्य व्यवसाय	कृषि	40	31.25
	मजदूरी	7	5.47
	व्यापार	31	24.22
	नौकरी	44	34.38
	परम्परागत व्यवसाय	6	4.69
मासिक आय (रुपये में)	5,000 तक	5	3.91
	5,001–10,000	10	7.81
	10,001–15,000	27	21.09
	15,001–25,000	47	36.72
	25,000 से अधिक	39	30.47
परिवार में सदस्यों की संख्या	3–4	27	21.09
	5–6	53	41.41
	7–8	33	25.78
	9–10	15	11.72
लिंगवार कुल सदस्य	पुरुष	72	56.25
	महिला	56	43.75

तालिका सं0 2 में उत्तरदाताओं की पारिवारिक संरचना को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रतिदर्श में सम्मिलित 37.50% उत्तरदाताओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि ग्रामीण है, जबकि 35.94% उत्तरदाता शहरी तथा 26.56% उत्तरदाता कस्बाई पृष्ठभूमि के हैं। आधे से भी अधिक (57.81%) उत्तरदाताओं के परिवार की प्रकृति एकाकी है। सर्वाधिक (34.38%) उत्तरदाताओं के परिवार का मुख्य व्यवसाय सरकारी या प्राइवेट नौकरी है जबकि 31.25% उत्तरदाताओं के परिवार का मुख्य व्यवसाय कृषि, 24.22% उत्तरदाताओं के परिवार का मुख्य व्यवसाय व्यापार तथा 5.47% उत्तरदाताओं के परिवार का मुख्य व्यवसाय मजदूरी है। वहीं 4. 69% उत्तरदाताओं के परिवार अपने परम्परागत व्यवसाय द्वारा जीवनयापन कर रहे हैं।

सर्वाधिक (36.72%) उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 15 हजार से 25 हजार रुपये है जबकि 21.09% उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 10 हजार से 15 हजार रुपये तथा 7. 81% उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय रु0 5 हजार से 10 हजार के मध्य है। वहीं 30.47% उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 25 हजार रुपये से अधिक व 3.91% उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 5 हजार रुपये तक है। परिवार में सदस्यों की संख्या के अनुसार विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक (41.41%) उत्तरदाताओं के परिवार में 5 से 6 सदस्य हैं, जबकि 25.78% उत्तरदाताओं के परिवार में 7 से 8 सदस्य, 21.09% उत्तरदाताओं के परिवार में 3 से 4 सदस्य तथा 11.72% उत्तरदाताओं के परिवार में 9 से 10 सदस्य हैं। वहीं उत्तरदाताओं के परिवार में 56.25% सदस्य पुरुष एवं 43.75% महिलाएं हैं।

चित्र सं0 1 में युवा असंतोष की प्रकृति के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण प्रस्तुत किया गया है। इस चित्र के अनुसार सर्वाधिक 48.44% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर सामान्य है। वहीं, 37.5% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर निम्न एवं 14.06% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर उच्च है।

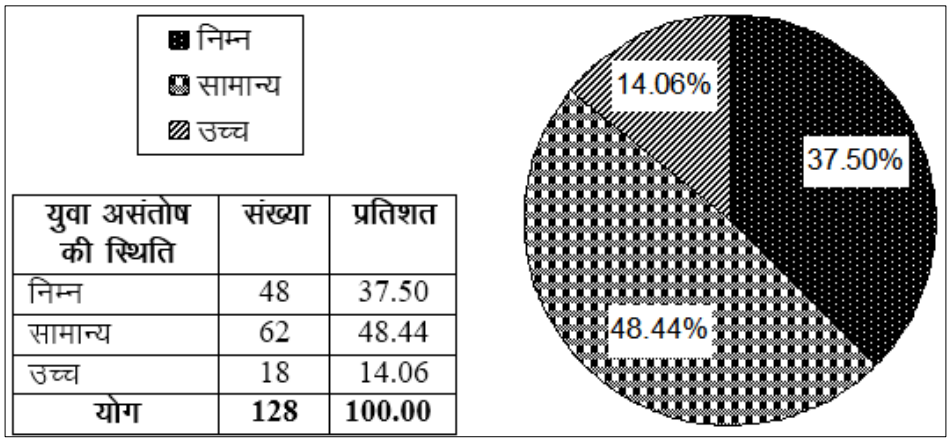

युवा असंतोष की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
निम्न	48	37.50
सामान्य	62	48.44
उच्च	18	14.06
योग	**128**	**100.00**

चित्र सं0 1: उत्तरदाताओं में युवा असंतोष की स्थिति

चित्र संख्या 2 के अनुसार सर्वाधिक 48.44% उत्तरदाताओं ने आकांक्षा और उपलब्धि के बीच की दूरी को युवा असंतोष का प्रमुख कारण माना है। वहीं 25.78% उत्तरदाताओं ने युवा असंतोष का प्रमुख कारण बेरोजगारी, 10.94% उत्तरदाताओं ने शिक्षा प्रणाली में दोष एवं 14.84% उत्तरदाताओं ने आर्थिक असमानता को युवा असंतोष का प्रमुख कारण माना है।

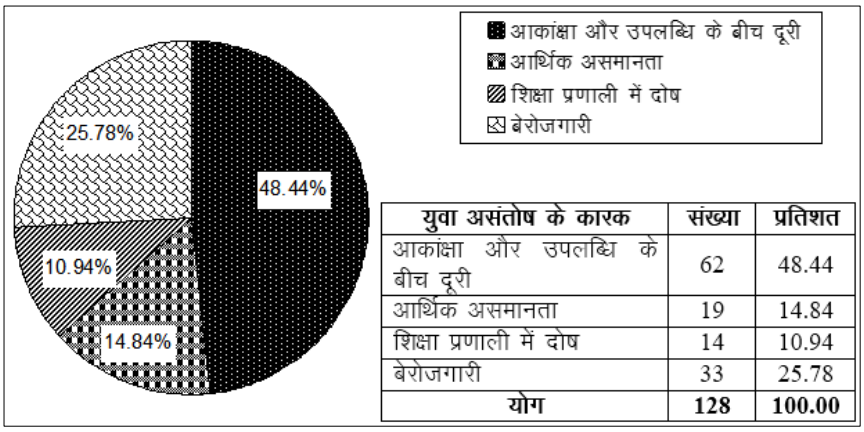

युवा असंतोष के कारक	संख्या	प्रतिशत
आकांक्षा और उपलब्धि के बीच दूरी	62	48.44
आर्थिक असमानता	19	14.84
शिक्षा प्रणाली में दोष	14	10.94
बेरोजगारी	33	25.78
योग	**128**	**100.00**

चित्र सं0 2: उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के कारक

चित्र संख्या 3 में उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति को प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 47.66% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति सामान्य है। वहीं, 32.03% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति मंद एवं 20.31% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति उग्र है।

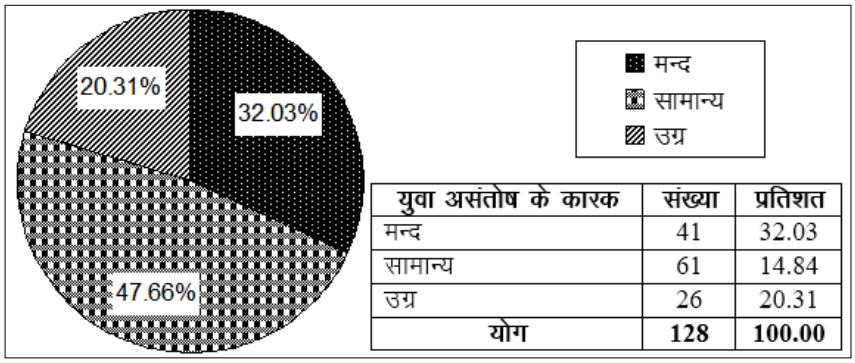

युवा असंतोष के कारक	संख्या	प्रतिशत
मन्द	41	32.03
सामान्य	61	14.84
उग्र	26	20.31
योग	**128**	**100.00**

चित्र सं0 3: उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति

परिकल्पना–1 : छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के कारकों, प्रकृति एवं व्यवहार में सार्थक अन्तर है।

प्रतिदर्श में छात्रों एवं छात्राओं की संख्या समान रखी गयी थी। छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के स्तर, कारक एवं व्यवहार की प्रकृति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण तथा काई–वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है, जिनका विवरण निम्नवत् है–

तालिका सं0 3: लिंगवार युवा असंतोष के स्तर में अन्तर

छात्र/छात्राएं	आवृत्ति	माध्य	मानक विचलन	माध्य–अन्तर	मानक त्रुटि	टी–मान
छात्र	64	18.43	10.49	3.79	0.98	**3.87
छात्राएं	64	14.64	9.26			

नोट : * p= 0-05 पर सार्थक अन्तर, ** p= 0-01 पर सार्थक अन्तर,
प्राप्त टी–मान त्र 3ण्87य स्वतंत्रता अंश (df) = 126

छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के स्तर के आगणित प्राप्तांकों के मध्यमानों का टी–मान 3.87 है जो 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी–मान (2.34) से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के स्तर में सार्थक अंतर है। तालिका संख्या 3 से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों में युवा असंतोष का स्तर छात्राओं की अपेक्षा बहुत अधिक है।

तालिका सं0 4: छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में अन्तर

छात्र/छात्राएं	आवृत्ति	माध्य	मानक विचलन	माध्य–अन्तर	मानक त्रुटि	टी–मान
छात्र	64	13.19	5.62	1.76	0.51	**3.43
छात्राएं	64	11.43	4.71			

नोट : * p= 0-05 पर सार्थक अन्तर, ** p= 0-01 पर सार्थक अन्तर,
प्राप्त टी–मान त्र 3.43; स्वतंत्रता अंश (df) = 126

छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति के आगणित प्राप्तांकों के मध्यमानों का टी–मान 3.43 है जो 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी–मान (2.34) से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में सार्थक अंतर है। तालिका संख्या 4 से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति छात्राओं की अपेक्षा बहुत अधिक उग्र है।

तालिका सं0 5: छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के कारकों में अन्तर

युवा असंतोष के प्रमुख कारक	छात्र / छात्राएं				
	छात्र		छात्राएं		योग
	प्राप्त	अनुमानित	प्राप्त	अनुमानित	
आकांक्षा और उपलब्धि के बीच दूरी	32	31.0	30	31.0	**62**
आर्थिक असमानता	10	9.5	9	9.5	**19**
शिक्षा प्रणाली में दोष	6	7.0	8	7.0	**14**
बेरोजगारी	16	16.5	17	16.5	**33**
कुल	**64**	**64**	**64**	**64**	**128**

काई वर्ग का प्राप्त मान = 0.433
स्वतंत्रता अंश (df) = (4-1) x (2-1) = 3 x 1 = 3; सम्भाव्यता स्तर = 0.05
स्वतंत्रता अंश 3 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर सारणी काई–स्क्वायर = 7.815

छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के कारकों के प्राप्तांकों में अन्तर का आगणित काई–स्क्वायर का मान (0.433) स्वतंत्रता अंश 3 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर तालिका काई–स्क्वायर (7.815) से कम है। अतः यह कहा जा सकता है कि छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना–2 : ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारकों, प्रकृति एवं व्यवहार में सार्थक अन्तर है।
ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के स्तर, कारक एवं व्यवहार की प्रकृति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण तथा काई–वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है, जिनका विवरण निम्नवत् है–

तालिका सं0 6: ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के स्तर में अन्तर

पृष्ठभूमि	आवृत्ति	माध्य	मानक विचलन	माध्य–अन्तर	मानक त्रुटि	टी–मान
ग्रामीण	48	18.79	7.49	4.66	1.00	**4.68
शहरी	46	14.13	9.61			

नोट : * p= 0-05 पर सार्थक अन्तर, ** p= 0-01 पर सार्थक अन्तर,
प्राप्त टी–मान = 4.68; स्वतंत्रता अंश (df) = 92

तालिका सं0 6 से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के स्तर के आगणित प्राप्तांकों के मध्यमानों का टी–मान 4.68 है जो 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी–मान (2.62) से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के स्तर में सार्थक अंतर है। तालिका संख्या 6 से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष का स्तर शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुत अधिक है।

तालिका सं0 7: ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में अन्तर

पृष्ठभूमि	आवृत्ति	माध्य	मानक विचलन	माध्य– अन्तर	मानक त्रुटि	टी–मान
ग्रामीण	48	13ण्84	5ण्21	2ण्57	0ण्54	''4ण्74
शहरी	46	11ण्27	4ण्15			

नोट : * p= 0-05 पर सार्थक अन्तर, ** p= 0-01 पर सार्थक अन्तर
प्राप्त टी–मान = 4.74; स्वतंत्रता अंश (df) = 92

ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति के आगणित प्राप्तांकों के मध्यमानों का टी–मान 4.74 है जो 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी–मान (2.62) से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थिया में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में सार्थक अंतर है। तालिका संख्या 7 से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुत अधिक उग्र है।

तालिका सं0 8: ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारकों में अन्तर

युवा असंतोष के प्रमुख कारक	ग्रामीण		शहरी		योग
	प्राप्त	अनुमानित	प्राप्त	अनुमानित	
आकांक्षा और उपलब्धि के बीच दूरी	21	24ण्0	26	23ण्0	**47**
आर्थिक असमानता	6	5ण्6	5	5ण्4	**11**
शिक्षा प्रणाली में दोष	5	5ण्6	6	5ण्4	**11**
बेरोजगारी	16	12ण्8	9	12ण्2	**25**
कुल	**48**	**48**	**46**	**46**	**94**

काई वर्ग का प्राप्त मान = 2.632
स्वतंत्रता अंश (df) = (4-1) x (2-1) = 3 x 1 = 3; सम्भाव्यता स्तर = 0.05
स्वतंत्रता अंश 3 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर सारणी काई–स्क्वायर = 7.815

ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारकों के प्राप्तांकों में अन्तर का आगणित काई–स्क्वायर का मान (2.632) स्वतंत्रता अंश 3 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर तालिका काई–स्क्वायर (7.815) से कम है। अतः यह कहा जा सकता है कि

ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना–3 : विभिन्न सामाजिक श्रेणियों के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारकों, प्रकृति एवं व्यवहार में सार्थक अन्तर है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तरदाताओं को तीन सामाजिक श्रेणियों सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति/जनजाति में वर्गीकृत किया गया है। इन तीनों सामाजिक श्रेणियों के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के स्तर, कारक एवं व्यवहार की प्रकृति तथा उनमें सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए संकलित सूचनाओं का विश्लेषण निम्नवत् किया गया है–

तालिका सं0 9: सामाजिक श्रेणीवार विद्यार्थियों में युवा असंतोष का स्तर

सामाजिक श्रेणी	युवा असंतोष का स्तर						
	निम्न		सामान्य		उच्च		योग
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
सामान्य	13	23.21	32	57.14	11	19.64	**56**
अन्य पिछड़ा वर्ग	17	36.17	22	46.81	8	17.02	**47**
अनुसूचित जाति/जनजाति	15	60.00	7	28.00	3	12.00	**25**
कुल	**45**	**35.16**	**61**	**47.66**	**22**	**17.19**	**128**

तालिका सं0 9 में सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के स्तर को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामान्य वर्ग के कुल विद्यार्थियों में से 57-14% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर सामान्य है जबकि 23-21% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर निम्न एवं 19.64% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर उच्च है। इसी प्रकार अन्य पिछड़ा वर्ग के कुल उत्तरदाताओं में से 46.81% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर सामान्य है जबकि 36.17% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर निम्न एवं 17.02% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर उच्च है।

इसके विपरीत अनुसूचित जाति/जनजाति के कुल उत्तरदाताओं में से 60% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर निम्न है जबकि 28% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर सामान्य एवं 12% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर उच्च है।

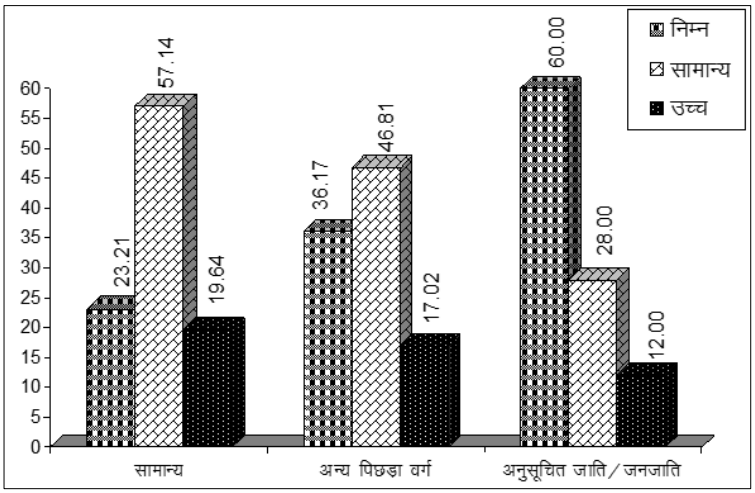

चित्र सं0 4: सामाजिक वर्ग वार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर

तालिका सं0 9 से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के स्तर में अन्तर है। युवा असंतोष के उच्च स्तर का प्रतिशत सामान्य श्रेणी के उत्तरदाताओं में अधिकतम (19.64%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति के उत्तरदाताओं में निम्नतम (12%) है। इसके विपरीत युवा असंतोष के निम्न स्तर का प्रतिशत सामान्य श्रेणी के उत्तरदाताओं में निम्नतम (23.21%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति के उत्तरदाताओं में अधिकतम (60%) है। सामाजिक श्रेणीवार युवा असंतोष के स्तर में इस अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए काई–वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तालिका सं0 10: सामाजिक श्रेणीवार विद्यार्थियों में युवा असंतोष के स्तर में अन्तर की सार्थकता

सामाजिक श्रेणी	युवा असंतोष का स्तर						
	निम्न		सामान्य		उच्च		योग
	प्राप्त	अनु0	प्राप्त	अनु0	प्राप्त	अनु0	
सामान्य	13	19.7	32	26.7	11	9.6	**56**
अन्य पिछड़ा वर्ग	17	16.5	22	22.4	8	8.1	**47**
अनुसूचित जाति/जनजाति	15	8.8	7	11.9	3	4.3	**25**
कुल	**45**	**45**	**61**	**61**	**22**	**22**	**128**

काई वर्ग का प्राप्त मान त्र $10^{0}354$

स्वतंत्रता अंश (df) = (3-1) x (3-1) = 2 x 2 = 4; सम्भाव्यता स्तर = 0.05

स्वतंत्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर सारणी काई–स्क्वायर = 9.488

सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के स्तर के प्राप्तांकों में अन्तर का आगणित काई–स्क्वायर का मान (10.354) स्वतंत्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर तालिका काई–स्क्वायर (9.488) से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के स्तर में सार्थक अन्तर है।

तालिका सं0 11: सामाजिक श्रेणीवार विद्यार्थियों में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति

सामाजिक श्रेणी	युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति						
	मन्द		सामान्य		उग्र		योग
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
सामान्य	11	19.64	28	50.00	17	30.36	**56**
अन्य पिछड़ा वर्ग	13	27.66	25	53.19	9	19.15	**47**
अनुसूचित जाति/जनजाति	13	52.00	9	36.00	3	12.00	**25**
कुल	**37**	**28.91**	**62**	**48.44**	**29**	**22.66**	**128**

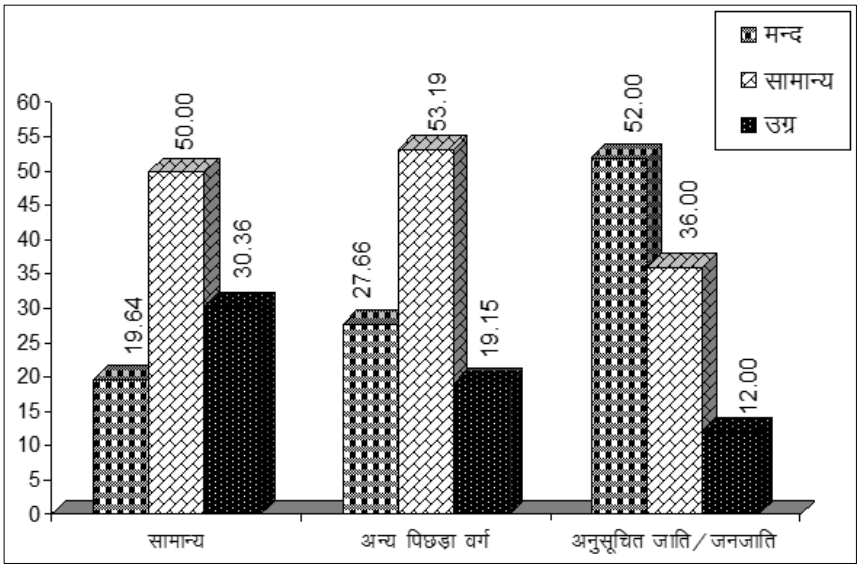

चित्र सं0 5: सामाजिक वर्ग वार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति

तालिका सं0 11 में सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामान्य वर्ग के कुल उत्तरदाताओं में से 50% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति सामान्य है जबकि 30.36% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति उग्र एवं 19.64% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति मन्द है। वहीं, अन्य पिछड़ा वर्ग के कुल उत्तरदाताओं में से 53.19% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति सामान्य है जबकि 27.66% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति मन्द एवं 19.15% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति उग्र है।

इसके विपरीत अनुसूचित जाति/जनजाति के कुल उत्तरदाताओं में से 52% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति मन्द है जबकि 36% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति सामान्य एवं 12% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति उग्र है।

तालिका सं0 11 से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि युवा असंतोष के व्यवहार की उग्र प्रकृति वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य श्रेणी में अधिकतम (30.36%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में निम्नतम (12%) है। इसके विपरीत युवा असंतोष के व्यवहार की मन्द प्रकृति वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य श्रेणी में निम्नतम (19.64%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में अधिकतम (52%) है। इससे स्पष्ट है कि श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में अन्तर है। सामाजिक श्रेणीवार युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में इस अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए काई–वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तालिका सं0 12: सामाजिक श्रेणीवार विद्यार्थियों में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में अन्तर की सार्थकता

सामाजिक श्रेणी	युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति						
	मन्द		सामान्य		उग्र		योग
	प्राप्त	अनु0	प्राप्त	अनु0	प्राप्त	अनु0	
सामान्य	11	16.2	28	27.1	17	12.7	**56**
अन्य पिछड़ा वर्ग	13	13.6	25	22.8	9	10.6	**47**
अनुसूचित जाति/जनजाति	13	7.2	9	12.1	3	5.7	**25**
कुल	**37**	**37**	**62**	**62**	**29**	**29**	**128**

काई वर्ग का प्राप्त मान त्र $10^{9}320$

स्वतंत्रता अंश (df) = (3-1) x (3-1) = 2 x 2 = 4; सम्भाव्यता स्तर = 0.05

स्वतंत्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर सारणी काई–स्क्वायर = 9.488

सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति के प्राप्तांकों में अन्तर का आगणित काई–स्क्वायर का मान (10.320) स्वतंत्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर तालिका काई–स्क्वायर (9.488) से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में सार्थक अन्तर है।

तालिका सं0 13: सामाजिक श्रेणीवार विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारक

युवा असंतोष के प्रमुख कारक	सामाजिक श्रेणी						योग
	सामान्य		अ0पि0व0		अनु0जा0		
	प्राप्त	अनु0	प्राप्त	अनु0	प्राप्त	अनु0	
आकांक्षा और उपलब्धि में अन्तर	31	48.44	24	37.50	9	14.06	**64**
आर्थिक असमानता	3	18.75	5	31.25	8	50.00	**16**
शिक्षा प्रणाली में दोष	3	21.43	6	42.86	5	35.71	**14**
बेरोजगारी	19	55.88	12	35.29	3	8.82	**34**
कुल	**56**	**43.75**	**47**	**36.72**	**25**	**19.53**	**128**

तालिका सं0 13 में सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के कारकों को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामान्य वर्ग के कुल उत्तरदाताओं में से 55.88% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का सबसे महत्वपूर्ण कारक बेरोजगारी है जबकि इसी वर्ग के 48.44% उत्तरदाताओं में आकांक्षा और उपलब्धि में अन्तर, 21.43% उत्तरदाताओं में शिक्षा प्रणाली में दोष एवं 18.75% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का प्रमुख कारक आर्थिक असमानता है। वहीं, अन्य पिछड़ा वर्ग के कुल उत्तरदाताओं में से 42.86% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षा प्रणाली में दोष जबकि इस वर्ग के 37.5% उत्तरदाताओं में आकांक्षा और उपलब्धि में अन्तर, 35.29% उत्तरदाताओं में बेरोजगारी एवं 31.25% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का प्रमुख कारक आर्थिक असमानता है।

इसके विपरीत अनुसूचित जाति/जनजाति के कुल उत्तरदाताओं में से 50% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का सबसे महत्वपूर्ण कारक आर्थिक असमानता है जबकि इस वर्ग के 35.71% उत्तरदाताओं में शिक्षा प्रणाली में दोष, 14.06% उत्तरदाताओं में आकांक्षा और उपलब्धि में अन्तर एवं 8.82% उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का प्रमुख कारक बेरोजगारी है।

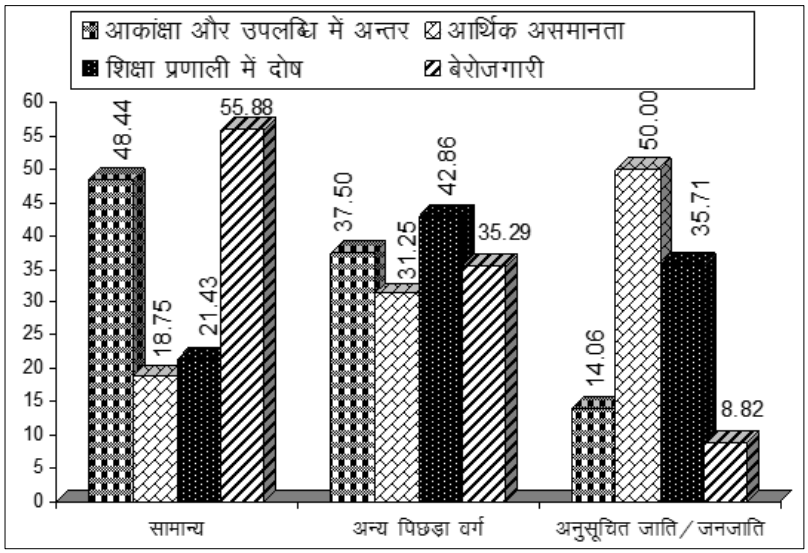

चित्र सं0 6: सामाजिक वर्गवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के कारक

तालिका सं0 13 से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि आकांक्षा और उपलब्धि में अन्तर को असंतोष का सबसे महत्वपूर्ण कारक मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य श्रेणी में अधिकतम (48.44%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में निम्नतम (14.06%) है। वहीं, आर्थिक असमानता को असंतोष का प्रमुख कारक मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य श्रेणी में निम्नतम (18.75%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में अधिकतम (50%) है। इसके विपरीत शिक्षा प्रणाली में दोष को युवा असंतोष का प्रमुख कारक मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग में अधिकतम (42.86%) तथा सामान्य वर्ग में निम्नतम (21.43%) है। इन सबसे अलग बेरोजगारी को युवा असंतोष का प्रमुख कारक मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य वर्ग में अधिकतम (55.88%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में निम्नतम (8.82%) है। इससे स्पष्ट है कि श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के कारकों में अन्तर है। सामाजिक श्रेणीवार युवा असंतोष के कारकों में इस अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए काई–वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तालिका सं0 14: सामाजिक श्रेणीवार विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारकों में अन्तर की सार्थकता

युवा असंतोष के प्रमुख कारक	सामाजिक श्रेणी						
	सामान्य		अ0पि0व0		अनु0जा0		योग
	प्राप्त	अनु0	प्राप्त	अनु0	प्राप्त	अनु0	
आकांक्षा और उपलब्धि में अन्तर	31	28.0	24	23.5	9	12.5	**64**
आर्थिक असमानता	3	7.0	5	5.9	8	3.1	**16**
शिक्षा प्रणाली में दोष	3	6.1	6	5.1	5	2.7	**14**
बेरोजगारी	19	14.9	12	12.5	3	6.6	**34**
कुल	**56**	**56**	**47**	**47**	**25**	**25**	**128**

काई वर्ग का प्राप्त मान त्र 18ण्107
स्वतंत्रता अंश (df) = (4-1) x (3-1) = 3 x 2 = 6; सम्भाव्यता स्तर = 0.05
स्वतंत्रता अंश 6 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.01 पर सारणी काई–स्क्वायर = 16.812

सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के कारकों के प्राप्तांकों में अन्तर का आगणित काई–स्क्वायर का मान (18.107) स्वतंत्रता अंश 6 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.01 पर तालिका काई–स्क्वायर (16.812) से भी अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के कारकों में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्षों का विश्लेषण

वर्तमान अध्ययन में पाया गया कि लगभग आधे (48.44%) उत्तरदाताओं में युवा असंतोष का स्तर सामान्य है, लेकिन छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के स्तर में सार्थक अंतर है (टी–मान 3.87)। छात्रों में युवा असंतोष का स्तर छात्राओं की अपेक्षा बहुत अधिक है। इसी तरह ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में भी युवा असंतोष के स्तर में सार्थक अंतर है (टी–मान 4.68) तथा ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष का स्तर शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुत अधिक है। सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के स्तर में भी सार्थक अन्तर है (काई–स्क्वायर का मान 10.354)। युवा असंतोष के उच्च स्तर का प्रतिशत सामान्य श्रेणी के उत्तरदाताओं में अधिकतम (19.64%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति के उत्तरदाताओं में निम्नतम (12%) है। इसके विपरीत युवा असंतोष के निम्न स्तर का प्रतिशत सामान्य श्रेणी के उत्तरदाताओं में निम्नतम (23.21%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति के उत्तरदाताओं में अधिकतम (60%) है।

वर्तमान शोध में पाया गया कि लगभग आधे (47.66%) उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति सामान्य तथा 20.31% उत्तरदाताओं में उग्र है। लिंगवार युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–मान 3.43)। यह भी पाया गया कि छात्रों में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति छात्राओं की अपेक्षा बहुत अधिक उग्र है। इसी प्रकार ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में भी सार्थक अन्तर पाया गया (टी–मान 4.74)। यह भी पाया गया कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति शहरी पृष्ठभूमि के उत्तरदाताओं की अपेक्षा बहुत अधिक उग्र है। युवा असंतोष के व्यवहार की उग्र प्रकृति वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य श्रेणी में अधिकतम (30.36%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में निम्नतम (12%) है। इसके विपरीत युवा असंतोष के व्यवहार की मन्द प्रकृति वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य श्रेणी में निम्नतम (19.64%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में अधिकतम (52%) है। सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के व्यवहार की प्रकृति में सार्थक अन्तर है (काई–वर्ग का मान 10.320)।

लगभग आधे (48.44%) उत्तरदाताओं ने आकांक्षा और उपलब्धि के बीच दूरी को 25.78% उत्तरदाताओं ने बेरोजगारी को, 10.94% उत्तरदाताओं ने शिक्षा प्रणाली में दोष को एवं 14.84% उत्तरदाताओं ने आर्थिक असमानता को युवा असंतोष का प्रमुख कारण माना है, लेकिन छात्रों एवं छात्राओं में युवा असंतोष के कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है (काई–वर्ग का मान 0.433)। इसी तरह यद्यपि ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में युवा असंतोष के कारकों में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं (काई–वर्ग का मान 2.632) है, लेकिन सामाजिक श्रेणीवार उत्तरदाताओं में युवा असंतोष के कारकों में स्पष्ट रूप से सार्थक अन्तर है (काई–वर्ग का मान 18.107)। आकांक्षा और उपलब्धि में अन्तर को असंतोष का सबसे महत्वपूर्ण कारक मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य श्रेणी में अधिकतम (48.44%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में निम्नतम (14.06%) है। वहीं, आर्थिक असमानता को असंतोष का प्रमुख कारक मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य श्रेणी में निम्नतम (18.75%) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में अधिकतम (50%) है। इसके विपरीत शिक्षा प्रणाली में दोष को युवा असंतोष का प्रमुख कारक मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग में अधिकतम (42.86%) तथा सामान्य वर्ग में निम्नतम (21. 43%) है। इन सबसे अलग बेरोजगारी को युवा असंतोष का प्रमुख कारक मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सामान्य वर्ग में अधिकतम (55.88:) तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में निम्नतम (8.82%) है।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष सिंह, सत्यदेव (1974), आर0एम0 भटनागर (1974), कुमार (2007), अंजुम एवं एजाज़ (2014) आदि के निष्कर्षों के अनुरूप ही हैं, परन्तु इनकी प्रतिशतता में अन्तर होने का कारण क्षेत्र एवं समयकाल में भिन्नता होना है।

इस अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्षों से यह भी स्पष्ट होता है कि हमारी उपकल्पनाएं अधिकांश क्षेत्रों में सत्य हैं।

सन्दर्भ स्रोत

1. अग्रहरि, नाथूलाल. 2000. मूल्यपरक शिक्षा और समाज, जयपुरः रावत पब्लिकेशन.
2. अंजुम, शबाना एवं एजाज़, आशिया. 2014. "स्टूडेंट्स अन्रेस्ट : काजेज एण्ड रिमेडीज", इण्डियन जर्नल ऑफ हेल्थ एण्ड वेलबीइंग, वा0–5, नं0–6.
3. क्लाकहोम, क्लाइड. 1962. वैल्यूज एण्ड वैल्यू ओरिएन्टेशन इन दि थ्योरी ऑफ एक्शन – ऐन इक्सप्लोरेशन इन डिफिनीशन एण्ड क्लासीफिकेशन इन दि टी0 परसंस एण्ड एडवर्ड सील्स टुवर्ड ए जनरल थ्योरी ऑफ एक्शन, अमेरिकाः हावर्ड युनीवर्सिटी प्रेस.
4. कॉरमैक, माग्रेट. 1961."शी हू राइड्स ए पीकॉक", इण्डियन स्टूडेन्ट्स एण्ड सोशल चेंज, बाम्बेः एशिया पब्लिकेशन हाउस.
5. कुमार, राजेन्द्र. 2007. "युवावर्ग में बढ़ती उच्छृंखलता", नूतन प्रतिबिम्ब, नई दिल्लीः राज्यसभा सचिवालय.
6. कोलमैन, जेम्स. 1961. दि एडोलसेंट सोसाइटी, न्यूयार्कः दि फ्री प्रेस.
7. खान, एस0आर0. 1984. दि टेंस यूथ : ए साइको–सोशल प्रोफाइल, दिल्लीः इनसाइट पब्लिकेशन.
8. गुप्ता, एम0एल0. एण्ड शर्मा, डी0डी0. 1998. सोशल डिसआर्गनाइजेशन, आगराः साहित्य भवन पब्लिशिंग.

9. जिमरमैन, कांले सी0. 1949. फैमिली एण्ड सिविलाइजेशन, न्यूयार्कः हार्पर एण्ड ब्रदर्स.
10. जी0ओ0आई0. 1949. रिपोर्ट ऑफ दि यूनीवर्सिटी एजूकेशन कमीशन, नई दिल्लीः मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया.
11. थोराट, सुखदेव. 2009. दलित्स इन इण्डिया : सर्च फॉर ए कॉमन डिसटिनी, नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशंस.
12. पॉल, देबस्मिता. 2013. "आक्युपेशनल एस्पिरेशन ऑफ यूथ इन कॉलेजेज : एन सोशियोलॉजिकल एनालाइसेस ऑफ प्रजेंट एण्ड फ्यूचर पोजीशन ऑफ यूथ इन सिलीगुढ़ी सिटी", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एण्ड इंटरडिस्पलिनरी रिसर्च, वा0–12, अंक–1.
13. बर्गेस, ई0डब्ल्यू0. लॉक, एच0जे0. 1949. दि फैमिली, न्यूयार्कः अमेरिकन बुक कम्पनी.
14. ब्रूबेकर, जॉन एस0. 1939. माडर्न फिलॉस्फीज ऑफ एजूकेशन, न्यूयार्कः मैकग्रा हिल बुक कम्पनी.
15. भट्ट, ए0. 1975. कास्ट, क्लास एण्ड पॉलिटिक्स : एन इम्पीरिकल प्रोजेक्ट ऑफ सोशल स्ट्रेटीफिकेशन इन माडर्न इण्डिया, नई दिल्लीः मनोहर पब्लिकेशंस.
16. भटनागर, आर0एम0. 1974. छात्र आन्दोलन : समस्या और समाधान, दिल्लीः सामयिक प्रकाशन.
17. मजूमदार, डी0एन0. 1958. रेसेज एण्ड कल्चर ऑफ इण्डिया, बाम्बेः एशिया पब्लिशिंग हाउस.
18. मिश्रा, राजन. 2006. नातेदारी विवाह और परिवार, आगराः ए0एस0आर0 सांइटिफिक पब्लिकेशन.
19. मिश्रा, वी0डी0. 1993. यूथ कल्चर : ए कम्परेटिव स्टडी इन दि इण्डियन कॉन्टेक्स्ट, नई दिल्लीः इण्टर इण्डिया पब्लिकेशन.
20. मैकाइवर, आर0एम0. एण्ड पेज, सी0एन0. 1950. सोसायटी, न्यूयार्कः मैकमिलन एण्ड कम्पनी.
21. राउल, कमलाकान्त. 2012. "डिकोडिंग डिसेंसी एण्ड वायलेंस : रोल ऑफ यूथ इन कंटम्परेरी ओडिशा", मेनस्ट्रीम, वा0–50. नं0–38.
22. राजू, सरस्वती. 2008. जेण्डर डिफरेंशियल्स इन एक्सेस टू हायर एजूकेशन इन इण्डिया : इश्यूज रिलेटेड टू इक्सपेंशन, इनक्लूसिवनेस, क्वालिटी एण्ड फायनेंस, नई दिल्लीः विश्वविद्यालय अनुदान आयोग.
23. वाघचवर, वी0बी0. धूमल, जी0बी0. कदम, वाई0आर0. एण्ड गोरे, ए0डी0. 2013. "ए स्टडी ऑफ स्ट्रस अमंग स्टूडेंट्स ऑफ प्रोफेशनल कालेजेज फ्राम एन अर्बन एरिया इन इण्डिया", जे0पोस्टग्रेड0मेडि0, वा0–44. इश्यू–1.
24. विद्यार्थी, एल0पी0. 1976. स्टूडेंट अन्रेस्ट इन छोटानागपुर, कलकत्ताः पंथी पुस्तक.
25. वेसलर, जे0ए0. 1953. दि ऐज ऑफ ससपिशन, न्यूयार्कः रेण्डम हाउस.
26. स्मिथ, ई0ए0. 1962. अमेरिकन यूथ कल्चर, न्यूयार्कः दि फ्री प्रेस.
27. स्पेन्सर, एम0. 1982. प्रिजिनयल, साइन्टिफिक एण्ड इन्टेलेक्चुयल स्टूडेन्ट पॉलिटिक्स (एडिटेड बाई लिपसेट), न्यूयार्कः दि फ्री प्रेस.
28. सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप. एवं चतुर्वेदी, शिखा. 2004 उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, मेरठः आर0 लाल बुक डिपो.
29. सरकार, एन0के0. 1978. सोशल स्ट्रेक्चर एण्ड डेवलपमेंट स्ट्रेटेजी इन एशिया, नई दिल्लीः पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस.
30. सूप, ए0एन0. 1998. "ए स्टडी ऑफ स्ट्रेस इन मेडिकल स्टूडेंट्स एट सेठ जी0एस0 मेडिकल कालेज", जे0पोस्टग्रेड0मेडि0, वा0–44, इश्यू–1.
31. सेल्टन, डब्ल्यू0. 2008. "यूजिंग मेंटल हेल्थ कंसलटेशन टू डिक्रीज डिस्रप्टिव बिहैवियर्स इन प्रिस्कूलर्स : एडाप्टिंग एन इम्पीरिकली सपोर्टेड इंटरवेंशन", जर्नल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी एण्ड साइकेट्री, वा–49 इश्यू–2.
32. शर्मा, कपिलदेव. 2014. "माडर्न इण्डियन यूथ : रीजन्स एण्ड रिजल्ट ऑफ अन्रेस्ट एण्ड कोर एजीटेशन", आई0ओ0एस0आर0 जर्नल ऑफ ऑफ ह्यूमनिटीज एण्ड सोशल साइंस, वा0–19, इश्यू–4.